म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

प्रारंभिक पढ़ना

भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0 LL04v1*

Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में, आप सीखेंगे कि अपनी कक्षाकक्ष में प्रारंभिक पठन का अध्यापन कैसे किया जाए,सहायता किस प्रकार दी जाए, इसकी योजना कैसे बनाई जाए और इसका आकलन कैसे किया जाए। पढ़ना शायद आपके विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त बनाने वाले कौशलों में से एक है। आपके विद्यार्थियों के प्रारंभिक पठन में सहायता देने और इसे प्रोत्साहित करने में आपकी भूमिका उनके भविष्य की शैक्षिक और जीवन की सफलता में महत्वपूर्ण है।

पढ़ने का कौशल सीखना जन्मजात विकासात्मक प्रक्रिया नहीं है। इसके बजाय, इसमें समय की एक अवधि के दौरान नियमित अभ्यास करना शामिल होता है। ऐसा अभ्यास अनौपचारिक रूप से (घर में या समुदाय में) और औपचारिक रूप से (स्कूल में) हो सकता है. पढ़ने के कई रास्ते होते हैं, जिनमें कुछ आपने स्वयं भी उपयोग किए होंगे।

यह तथ्य कि आप एक शिक्षक हैं इस बात को सूचित करता है कि आप एक कुशल और आत्मविश्वासी पाठक हैं और आप जानकारी और मनोरंजन दोनों ही उद्देश्यों के लिए अलग अलग प्रकार के पाठ को पढ़ सकते हैं। मुद्रित पाठ को पढ़ने के साथ-साथ, आप किसी कंप्यूटर या मोबाइल फोन की स्क्रीन पर भी पाठ को पढ़ सकते हैं। आपने यह जटिल कौशल कैसे सीखा? इस इकाई में आप पाठक बनने की अपनी यात्रा को और साथ ही अपने विद्यार्थियों की इस यात्रा में अपनी भूमिका को देखेंगे।

इस इकाई से आप क्याा सीख सकते हैं

- प्रारंभिक पठन के लिए ऐसे पाठों की योजना किस प्रकार बनाई जाए, जो आकर्षक और मज़ेदार हों।
- छोटे विद्यार्थियों द्वारा पढ़ना सीखने के आरंभिक चरणों के दौरान दिखाए जाने वाले व्यवहारों की पहचान किस प्रकार की जाए।
- प्रारंभिक पठन के विकास का आकलन करने और उसमें सहायता करने के तरीके।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

आरंभिक पठन सिखाना विद्यार्थियों को केवल वर्णों और शब्दों की पहचान करने में सक्षम बनाने तक सीमित नहीं है।अपितु यह पूरे पाठ का अर्थ समझ पाने में आपके विद्यार्थियों की मदद करने से संबंधित है। इससे उनका भाषा का ज्ञान और दुनिया की समझ बढ़ती है। जिन बच्चों को पढ़ने में मज़ा आता है और जो कुशल एवं वाक्पटु पाठक बन जाते हैं वे अक्सर स्कूल के सभी क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके सभी विद्यार्थी इसमें जुड़ें और उनके पठन में प्रगति हो यह महत्वपूर्ण है कि आप

- उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करें
- उनका अवलोकन और आकलन करें
- उनकी निगरानी के द्वारा आपको प्राप्त होने वाली जानकारी का उपयोग इस आवश्यक कौशल के विकास के लिए उनके लिए ज़रूरी अध्यापन और सहायता की योजना बनाने में करें।

1 पढ़ने की शुरुआत – 'कौन?', 'क्या?', 'कहाँ?', 'क्यों?'

आपके प्रारंभिक पठन अनुभवों के बारे में आपको क्या याद है? नीचे वर्णित अनुभवों के साथ उनकी तुलना किस प्रकार की जा सकती है?

केस स्टडी 1: पढ़ना सीखने की यादें

निम्नलिखित उद्धरणों में, सात शिक्षक पढ़ना सीखने के अपने प्रारंभिक अनुभवों को व्यक्त कर रहें हैं। जब आप उनके संस्मरण पढ़ते हैं, तो टिप्पणियाँ दर्ज करें कि किसने पढ़ने में उनकी मदद की, उन्होंने क्या पढ़ा, कहाँ पढ़ा, और क्यों पढ़ा।

(1) मेरी माँ कई पारंपरिक कथाएँ सुनाया करती थीं, जिन्हें सुनकर मेरा और मेरी बहनों का मनोरंजन होता था। कभी-कभी वे उन्हें लिखती थीं और उनके चित्र बनाती थीं। उन्होंने हमें भी प्रोत्साहित किया कि हम रिसाइकिल किए गए कागज़ से और पत्रिकाओं के कट-आउट से अपनी चित्र पुस्तिका बनाएँ। मेरे पास उन पुस्तकों का एक छोटा-सा संग्रह था, जो हमने साथ मिलकर बनाई थीं।

(2) मेरे दादाजी बहुत सख्त मिज़ाज व्यक्ति थे। हर दिन वे मुझे शब्दकोश के पाँच शब्द याद करवाते थे। हमारे घर में वही एकमात्र पुस्तक थी। एक बार, जब वे मुझे पैसे नहीं दे रहे थे, तो मैंने उनसे कहा 'आप बहुत *कंजूस* हैं!' इससे वे चिढ़ गए, लेकिन वे हँसने भी लगे। मेरे पास एक व्यापक शब्दावली थी, लेकिन मैंने कहानियों की कोई किताबें नहीं पढ़ी थीं।

(3) मेरे बचपन में, पिताजी हर दिन शाम को हमें वेदों से एक अंश पढ़कर सुनाते थे। इसके बाद वे हमसे इसकी व्याख्या करने को कहते थे। वे अंश जटिल और समझने में कठिन होते थे। एक दिन मेरी दीदी ने चुपचाप वेद लिए और अगला अंश मुझे पढ़कर सुनाया। उन्होंने इसका अर्थ भी इतना स्पश्ट रूप से बताया कि मुझे वह समझ आ गया। उस दिन ाम को पिताजी मुझसे बहुत प्रसन्न हुए!

(4) मेरी दादी एक लकड़ी से मिट्टी में शब्द बनाती थीं और मुझसे उनका अर्थ पूछती थीं। शब्दों से मेरा यह पहला परिचय था। इसके बाद मेरी बहन ने अपनी स्कूल की पाठ्यपुस्तक से मुझे पढ़ना सिखाया। उसने ऐसा इसलिए किया यह मेरी ऊंचाई ज्यादा थी और मैं अपनी उम्र से बड़ा लगता था, इसलिए उसे चिंता थी कि अगर स्कूल जाने पर मैं पढ़ नहीं सका, तो लोग मुझे चिढ़ाएंगे।

(5) मेरे घर में और गाँव में कोई पठन सामग्री नहीं थी। पहली बार मैंने लिखे हुए शब्द स्कूल जाने पर ही देखे थे। मेरी शिक्षिका मेरी प्रेरणा की स्रोत थी। वे कई रोमांचक कहानियाँ सुनाती थीं और हम ज़मीन पर बैठकर उन्हें सुनते थे। मुझे वे कहानियाँ आज भी याद हैं। इसके बाद उन्होंने वे कहानियाँ बड़े-बड़े अक्षरों में चार्ट पेपर पर लिख दीं, ताकि हर कोई उन शब्दों को देख सके। चूंकि मुझे वे कहानियाँ पहले ही याद हो गई थीं, इसलिए मुझे लगा कि मैं उन्हें आसानी से पढ़ सकता हूँ।

(6)मेरे स्कूल के शिक्षक ने मुझे कविताएँ याद करना सिखाया। समय के साथ-साथ इनकी लंबाई बढ़ती गई। लंबी कविता को याद करना मज़ेदार होता था। मैं अपने माता-पिता को कविता सुनाकर आकर्षित किया करता था। कभी-कभी वे मुझसे घर आए मेहमानों को कविता सुनाने को कहते थे। मुझे रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता Independence Day आज भी याद है। मुझे उसकी शुरूआती पंक्तियाँ बहुत पसंद हैं: 'When the mind is without fear/And the head is held high/Where knowledge is free…'. बहुत बड़ी उम्र तक मैंने किताबों में कविताएँ नहीं पढ़ीं।

(7)वयस्क होने से पहले तक मुझे पढ़ने में रुचि नहीं थी। मेरे स्कूल के शिक्षक हमारी कक्षा में सिर्फ पाठ्यपुस्तक का ही उपयोग करते थे। हम पाठ पढ़ते थे और अभ्यास पूरा करते थे। इसकी सामग्री बहुत ऊबाऊ थी और मेरी रुचियों से बिल्कुल अलग थी। मैंने घर में जो कहानियाँ सुनी थीं, वे कहीं ज्यादा रोचक थीं, मुझे रात में देर तक जागकर अपने चाचाजी से रामायण की कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था। उम्र बढ़ने पर मुझे सिनेमा देखने जाना पसंद था। वास्तव में सभी फ़िल्में कहानियाँ ही होती हैं।

विचार कीजिए

इन उद्धरणों के बारे में आपकी टिप्पणियों से क्या पता चलता है?

- कौन? क्या यह देखकर आपको अचरज हुआ कि इतने सारे अलग-अलग लोगों का उल्लेख इन व्यक्तियों को पढ़ना सिखाने में मदद करने वाले मुख्य लोगों के तौर पर किया गया है? एक व्यक्ति को एक प्रेरक शिक्षक याद हैं; दूसरे ने अपने परिवार के एक सदस्य के बारे में बात की है। आपके विद्यार्थियों को स्कूल से बाहर चाहे जो भी अतिरिक्त सहायता मिलती हो, लेकिन उनकी प्रारंभिक पठन सफलता में आपका योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है।
- क्या? पठन सीखना कई तरह की स्रोत सामग्रियों पर आधारित होना चाहिए और इसमें विभिन्न गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए। कहानियाँ सुनना, कविताएँ दोहराना, किताबें बनाना और शब्दों को याद करना इन अनुभवों में उल्लेख किए गए केवल कुछ ही तरीके हैं।
- कहाँ? पठन सीखने की प्रक्रिया कई अलग अलग परिवेशों में हो सकती है। बच्चों का एक स्थान पर पढ़ने से परिचय करवाया जा सकता है और वे दूसरे स्थान पर सीखना जारी रख सकते हैं।
- क्यों? जिन लोगों को कथावाचन और पठन आकर्षक और मज़ेदार लगता है, बच्चे आसानी से उनकी नकल करने लगते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण बताते हैं कि पठन सीखना एक अन्योन्यश्रित (परस्पर सीखना)प्रक्रिया है, जिसमें कई तरह के लोग, सामग्री के स्रोत और अनुभव शामिल होते हैं। क्या यहाँ वर्णित पद्धतियों और संसाधनों में से कोई आपकी कक्षा में भी मौजूद हैं? क्यों या क्यों नहीं?

गतिविधि 1: पढ़ना सीखने की आपकी यादें
अब आप पढ़ना सीखने की अपनी यादों के बारे में बताएंगे। चित्र 1 में बने चार्ट के बीच में अपना नाम लिखें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर अन्य चार हिस्सों को पूरा करें: • पठन से आपका परिचय किसने करवाया? • आपने सबसे पहली बार क्या पढ़ा था?

- आपने यह कहाँ पढ़ा था?
- ऐसा क्यों हुआ था?

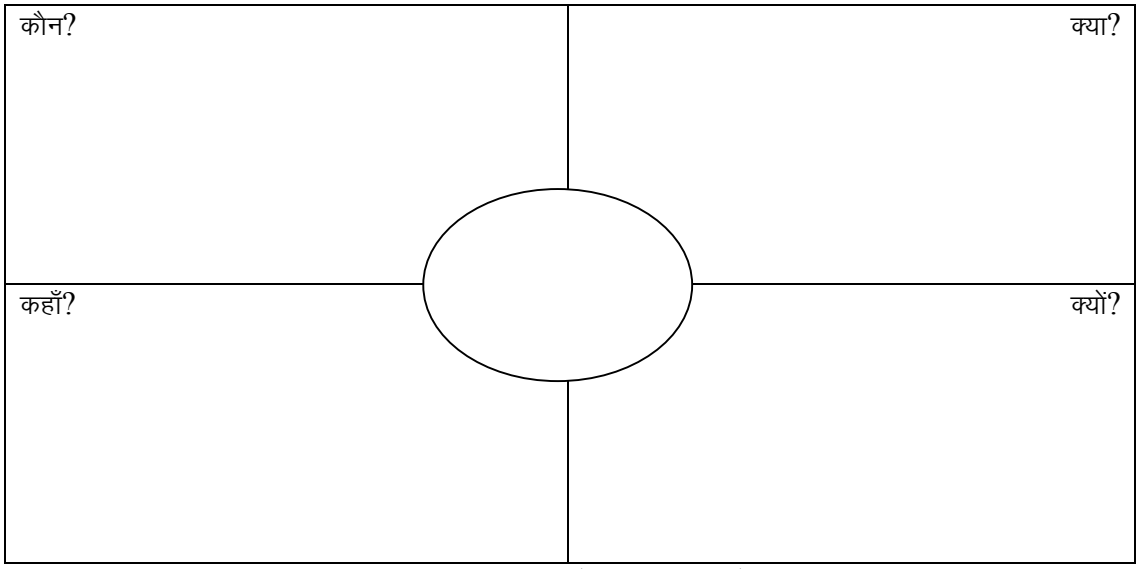

चित्र *1* पढ़ना सीखने की आपकी यादें

अपनी यादें किसी साथी शिक्षक के साथ बाँटें। पढ़ना सीखने के आपके अनुभवों में क्या समानताएं और अंतर हैं?

क्या आप अपने प्रारंभिक पठन अनुभवों का उपयोग अपने कक्षा अध्यापन में करते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

विचार कीजिए

अब इस चार्ट को अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के नज़रिए से देखें। चार्ट के बीच में आपके नाम की जगह आपके किसी विद्यार्थी के नाम की कल्पना करें।

- हालांकि, पठन से आपके विद्यार्थियों का परिचित करवाने में स्कूल से बाहर के लोगों की भी भूमिका हो सकती है, लेकिन एक शिक्षक के रूप में, आप ही इस चार्ट में 'कौन' वाले हिस्से में हैं। अपने विद्यार्थियों के लिए पठन का रोल-मॉडल बनें। उन्हें दिखाएँ कि आपको किताबें और पढ़ना पसंद हैं।
- आपके विद्यार्थी कक्षा में 'क्या' पढ़ते हैं, यह आपकी ज़िम्मेदारी है। ऐसे संसाधनों और गतिविधियों को ढूँढ़ें जिनसे उन्हें पाठक बनने की प्रेरणा मिले। इसमें भी रुचि दिखाएँ कि आपके विद्यार्थी कक्षा से बाहर क्या पढ़ते हैं।
- इस चार्ट में, 'कहाँ' उनके स्कूल को संदर्भित करता है; लेकिन आपके विद्यार्थियों घर, मंदिर या मस्जिद भी उनके प्रारंभिक पठन अनुभवों के लिए महत्वपूर्ण स्थान हो सकते हैं?
- पठन का 'क्यों' प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अलग होगा। उनमें से कुछ विद्यार्थी जिज्ञासा के कारण पढ़ेंगे, जबकि कुछ अन्य कर्तव्य के कारण पढ़ेंगे।

केस स्टडी 2: 'बस पर बक्से' (Boxes on the Bus)

इंदौर में कक्षा एक की शिक्षिका श्रीमती लता बताती हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने छोटे विद्यार्थियों को 'Boxes on the Bus' नामक एक सरल कहानी के द्वारा आकर्षित किया (संसाधन 1 देखें).

यह कहानी बहुत सरल है: ये एक बस में चढ़ने वाले अलग अलग लोगों की कहानी है, जिनमें से हर एक के पास एक बक्सा होता है। प्रत्येक बक्से में कुछ अलग सामान है। धीरे-धीरे बस पूरी तरह भर जाती है और किसी नए व्यक्ति के आने की जगह नहीं बचती।

कहानी सुनाने से पहले, मैंने कुछ ऐसी चीजों के बारे में सोचा, जो बक्से में हो सकती हैं। मैंने सबसे पहले विद्यार्थियों को कार्डबोर्ड का एक बड़ा बक्सा दिखाया, जो मैं अपने घर से लाई थी। वे इसे देखकर काफी रोमांचित थे। इसके बाद मैंने उन्हें कहानी सुनाई। जब भी वाक्यांश '... और उस बक्से में थे...' कहती, तो मैं अपने विद्यार्थियों को इसमें शामिल होने को आमंत्रित करती थी। मैंने बक्से में रखने के लिए जो वस्तुएँ सोचीं, उनमें एक बटन और एक बकरी शामिल थे।

हर मामले में, मैंने विद्यार्थियों से कहा कि वे कक्षा के सामने खड़े होकर हावभाव के द्वारा उस वस्तु का वर्णन करें। लबानी ने एक बटन का प्रदर्शन करने के लिए अपना अंगूठा और पहली ऊँगली साथ मोड़ ली और पद्मज ने एक बकरी का संकेत देने के लिए अपने हाथ पर चार उंगलियाँ 'चलाई'।

कहानी एक बार सुनाने के बाद, मैंने उन्हें दोबारा कहानी सुनाई और इस बार हर हिस्से के बाद मैंने विराम लिया, ताकि मेरे विद्यार्थी मेरे पीछे उसे दोहराएँ। इसके बाद मैंने कहानी फिर से सुनाई, और मेरे विद्यार्थियों ने हावभावों के द्वारा उसका प्रदर्शन करते हुए मेरे साथ कहानी दोहराई।

दो दिन बाद, मैंने अपने विद्यार्थियों की जोड़ियाँ बनाईं, जिनमें मैंने ज्यादा आत्मविश्वास वाले विद्यार्थियों को यथासंभव कम आत्मविश्वास वाले विद्यार्थियों के साथ रखा, और उनसे कहा कि वे अपनी याददाश्त के अनुसार 'Boxes on the Bus' बस पर बक्सें कहानी एक दूसरे को सुनाएँ।

दो विद्यार्थी पिछले सत्र में मौजूद नहीं थे, इसलिए मैंने ऐसी जोड़ियाँ चुनीं, जो उनकी सहायता कर सकें और उन्हें समझा सकें कि उन्होंने पहले क्या सीखा है, और अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनके साथ तीन के समूह में रखा।

इसके बाद मैंने पूरी कक्षा से कहा कि वे इस कहानी की सामग्री से मेल खाने वाली छवियाँ कुछ रंगीन पत्रिकाओं से काटने, मैं जो कार्डबोर्ड का बक्सा लाई थी, उस पर उन्हें चिपकाने और उन पर लेबल लगाने के लिए उनके बगल में शब्द लिखने में मेरी मदद करें।

अगले सप्ताह, मुझे एक नाव यात्रा के बारे में चित्र पुस्तिका मिली, जिसने मुझे कहानी के वैकल्पिक संस्करण पर सोचने की प्रेरणा दी - इस बार उसे 'Boxes on the Boat' नाम दिया गया। इस संस्करण के लिए, मैंने खुद बताने के बजाय अपने विद्यार्थियों से सुझाव मांगे कि प्रत्येक बक्से में क्या रखा था।

विचार कीजिए

निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें और यदि संभव हो, तो अपने किसी साथी शिक्षक के साथ उन पर चर्चा करें:

- वह क्या है, जो 'Boxes on the Bus' को एक पठन गतिविधि बनाता है?
- श्रीमती लता के छात्र भाषा के बारे में क्या सीख रहे थे?
- वे वर्णों और ध्वनियों के बारे में क्या सीख रहे थे?

दूसरों के विचारों के साथ आपके विचारों की तुलना करें।

विद्यार्थियों को प्रारभिक पठन गतिविधियों में एक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। श्रीमती लता की कक्षा के छोटे विद्यार्थी 'Boxes on the Bus' की कहानी में सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे क्योंकि:

- वे साथ मिलकर कहानी सुन रहे थे
- वे मुख्य वाक्यांश '... and in the box was ...'(और उस बक्से में थे) को दोहराकर तथा उनके सहपाठियों द्वारा बनाए गए हाव–भावों की नकल करके अपनी आवाज़ और शरीर का उपयोग कर रहे थे
- चित्रों और लेबल के द्वारा बक्से को सजाकर वे परिचित कहानी की ध्वनियों को अक्षरों, शब्दों और वाक्यांशों के साथ जोड़ पाने में सक्षम थे।

कोई मज़ेदार कहानी कई बार सुनना विद्यार्थियों को बहुत अच्छा लगता है। इससे वे पात्रों को जान सकते हैं, आगे क्या होने वाला है यह सोच सकते हैं और वह कहानी दोबारा खुद सुना सकते हैं।

गतिविधि 2: एक सरल कहानी को बढ़ाने के लिए संसाधन ढूँढना

इस गतिविधि के लिए, केस स्टडी 2 की कहानी 'Boxes on the Bus' पर अथवा अपनी पसंद की किसी अन्य कहानी पर आधारित कुछ प्रारंभिक पठन गतिविधियों की योजना बनाएँगे। सबसे पहले अपनी कक्षा, स्कूल, घर और समुदाय में देखें। कहानी सुनाने में सुधार के लिए कौन-से संसाधन उपलब्ध हैं? निम्नलिखित चीजों पर विचार करें:

- उपयुक्त वस्तुएँ
- चित्र
- योगदान कर सकने वाले लोग
- वस्तुएँ बनाने के लिए विविध सामग्री।

आपने जिन संसाधनों की पहचान की है, उनका उपयोग करके कहानी को आगे बढ़ाने के लिए यथासंभव ज्यादा से ज्यादा विचार करें। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- कई कहानियाँ चित्रों या वस्तुओं के माध्यम से दर्शाई जा सकती हैं। 'Boxes on the Bus' की कहानी के लिए, आप अलग अलग आकारों वाले बक्से, एक खिलौना बस, एक बस का पोस्टर, और प्रत्येक बक्से में रखी वस्तुएँ दर्शाने के लिए कई छोटी-छोटी चीजें या पत्रिकाओं के चित्रों का उपयोग कर सकते हैं।
- क्या आपने किन्हीं ऐसे व्यक्तियों के बारे में सोचा, जो यह कहानी सुनाने में योगदान कर सकते हैं? क्या स्कूल के किसी छात्र के परिवार के कोई सदस्य बस चलाते हैं? यदि ऐसा है, तो उन्हें - या यदि विद्यार्थी बड़ी उम्र का है, तो उसे - इस बारे में बताने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।
- अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर आप कहानी के शब्दों और चित्रों का एक पोस्टर बना सकते हैं।
- आप एक सरल नाटिका भी तैयार कर सकते हैं, जिसमें एक विद्यार्थी बस ड्राइवर की भूमिका निभाएगा। कक्षा को दो समूहों में बाँटें। एक समूह के विद्यार्थी अपने साथ एक बक्से में कोई सामान लेकर बस में चढ़ेंगे। दूसरे समूह के विद्यार्थी अनुमान लगाएँगे कि हर बक्से में क्या सामान है। वैकल्पिक रूप से, आप एक गीत तैयार कर सकते हैं और अपने विद्यार्थियों को कहानी गाकर सुनाने को कह सकते हैं।

अपनी कक्षा में अपने विचारों और संसाधनों को आज़माने के लिए एक योजना बनाएँ। यह याद रखें कि एक या दो बड़ी गतिविधियों की बजाय कुछ दिनों तक चलने वाली कई छोटी-छोटी गतिविधियाँ आपके छोटे विद्यार्थियोंमें सीखने को बढ़ावा देने में ज्यादा प्रभावी होती हैं। अपने विचारों के बारे में अपने साथी शिक्षकों के साथ चर्चा करें और फिर उन्हें अपनी पाठ योजना में शामिल करें।

विचार कीजिए

- गतिविधियों की इस श्रृंखला से आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा? आप कैसे कह सकते हैं?
- क्या हर कोई सक्रिय रूप से शामिल था? इसे सुनिश्चित करने के लिए आप अलग ढंग से क्या कर सकते थे?

कथावाचन - अपनी याददाश्त से कहानियाँ सुनाना - यह विद्यार्थियों का पठन से परिचय करवाने का एक अच्छा तरीका है। यह कहानियों के प्रवाह से उनका परिचय करवाता है और इस बारे में उनकी रुचि जगाता है कि आगे क्या होगा। कहानी से संबंधित आपके प्रश्नों के बारे में उनके जवाबों से आप आकलन कर सकते हैं कि उन्होंने क्या सीखा है और क्या वे अपने आप कहानी फिर से सुना सकते हैं या इसके लिए उन्हें आपकी सहायता की ज़रुरत होती है। यह अवश्य जांचें कि आपके सभी विद्यार्थी इसे समझ गए हैं और यदि आपको लगता है कि वे इसे समझ नहीं सके हैं, तो कहानी अलग अलग तरीकों से दोबारा सुनाएँ।

प्रारंभिक पठन कौशल का विकास करने में अपने विद्यार्थियों की सहायता करने का एक और तरीका उन्हें ऊंची आवाज़ में पुस्तकें पढ़कर सुनाना है।

2 अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाना

ऊंची आवाज़ में पुस्तकें पढ़कर सुनाने और ऐसा करते समय पुस्तक के शब्दों पर अपनी ऊँगली रखने से आपके विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिलेगी कि छपे हुए शब्दों में अर्थ छिपा होता है। वे सीखेंगे कि किताब किस तरह पकड़ी जाती है और पन्ने कैसे पलटाए जाते हैं, तथा किस प्रकार पाठ शुरू से अंत तक, बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे तक एक क्रम में होता है।

चित्र *1* छपे हुए पन्नों पर शब्दों को पढ़ते समय उन पर अपनी ऊँगली रखने से

को विद्याथियों यह सीखने में मदद मिलेगी कि शब्दों में अर्थ होते हैं।

जब आप पढ़ने के अच्छे तरीके अपनाएँगे तो आपके विद्यार्थी आपकी नकल करेंगे। वे पुस्तकों को खुद 'पढ़ने' की कोशिश करेंगे, जिसमें वे कभी-कभी अपनी याददाश्त से कहानी के शब्दों को याद करेंगे, कभी चित्रों से संकेत लेंगे और कभी-कभार अपने अनुभव और कल्पना के आधार पर खुद ही कहानी बना लेंगे। ये सभी इस बात को प्रोत्साहित करने वाले संकेत हैं कि उनमें पढ़ानें के अच्छे तरीकों का विकास हो रहा है, इसलिए जब वे ऐसा करते हैं, तो उन पर अवश्य ध्यान दें और उन्हें प्रोत्साहित करें।

केस स्टडी 3: आदर्श वाचन

सुश्री सरोज एक प्राथमिक शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि किस तरह वे अपने छोटे विद्यार्थियों के लिए आदर्श वाचन का प्रयास करती हैं।

चाहे कोई कविता हो या लघुकथा, उसे मैं हर दिन अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाती हूँ। मैं बहुत सावधानी से किताब खोलती हूँ, ध्यानपूर्वक पृष्ठ पलटती हूँ, कोई कविता या कहानी चुनती हूँ, और अभिव्यक्ति के साथ इसे पढ़ती हूँ, और ऐसा करते समय

पाठ पर अपनी उँगली घुमाती जाती हूँ और अपने विद्यार्थियों को साथ बने चित्र दिखाती हूँ। अक्सर मैं अलग अलग अवसरों पर एक ही कविता या कहानी एक से ज्यादा बार पढ़ती हूँ।

जबसे मैं ऐसा करती आ रही हूँ, मैंने देखा है कि मेरे छोटे विद्यार्थी भी किताब को ध्यानपूर्वक संभालने लगे हैं, वे उसे सही तरीके से पकड़ते हैं, एक-एक करके पृष्ठ पलटते हैं, चित्रों को ध्यान से देखते हैं और कभी-कभी शब्दों के नीचे ऊँगली फिराते हैं। बारी-बारी से उनका अवलोकन करके - उनमें से कौन चित्र देख रहा है, पढ़ने का दिखावा कर रहा है, पढ़ने की कोशिश कर रहा है अथवा अधिकांश या सभी शब्द पढ़ रहा है, इस पर ध्यान देकर - मैं इस कौशल के विकास में उनमें से हर एक की प्रगति की निगरानी कर सकती हूँ।

गतिविधि 3: अपने को ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाना
केस स्टडी 3 और संसाधन 2 का उपयोग सन्दर्भ के रूप में करके, अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाने के एक सत्र की योजना बनाएँ, उसे लागू करें और उसका मूल्यांकन करें। यदि संभव हो, तो एक साथी शिक्षक के साथ अपने विचारों और निष्कर्षों पर चर्चा करें।

अगले अनुभाग में कुछ ऐसी रणनीतियों का वर्णन किया गया है, जिनका उपयोग आपके छोटे विद्यार्थी उनके प्रारंभिक पठन में कर सकते हैं।

3 पढ़ने के सिद्धांत

छोटे बच्चे अलग अलग तरीकों से पढ़ना सीखते हैं:

- कहानियों को सुनकर और वे जो भाषा सुनते हैं, उसे दोहराकर। ऐसा करके वे भाषा को आत्मसात करते और पढ़ते हैं - इसका मतलब है, अभिव्यक्ति, वाक्यांश और वाक्य।
- बारी-बारी से हर अक्षर और शब्द को पढ़कर वे अच्छी तरह जान जाते हैं कि शब्द कैसे बनते हैं और हर शब्द का मतलब क्या होता है।
- वे पृष्ठ पर लिखे शब्दों को पढ़ने और समझने में उनकी मदद करने के लिए चित्रों का उपयोग भी करते हैं।

वास्तव में ज्यादातर विद्यार्थी इन सभी रणनीतियों के मिश्रण का उपयोग करते हैं।

केस स्टडी **4:** सुश्री गुप्ता के विद्यार्थियों की पठन रणनीतियाँ

मध्यप्रदेश में कक्षा एक की शिक्षिका सुश्री गुप्ता, अपने छोटे विद्यार्थियों की कुछ पठन रणनीतियों का वर्णन कर रही हैं।

नमिता एक उत्साही और नाटकीय कथावाचिका थी। वह नियमित रूप से अपने सहपाठियों को कहानियाँ सुनाती थी। उनमें से कुछ याददाश्त से सुनाई जाती थी, जबकि कुछ तो उसी समय बना ली जाती थीं। जब मैं कक्षा में कहानियाँ सुनाती थी, तब वह बहुत ध्यानपूर्वक सुनती थी और मेरे साथ मुख्य शब्दों व वाक्यांशों को दोहराती थी। जब नमिता खुद ऊँची आवाज़ में पढ़ती थी, तो वह कुछ गलतियाँ करती थी, जैसे 'गधे' की जगह 'घोड़ा' बोलना, लेकिन उसके ये बदले हुए शब्द भी हमेशा अर्थपूर्ण ही होते थे। मैंने नमिता की शब्दों की पहचान में सुधार करने के लिए उसे कुछ सरल पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना तय किया। मैंने उसे रंगों के बारे में एक किताब दी। नमिता ने किताब के कवर को देखा, जल्दी-जल्दी पन्ने पलटाए और रोमांचित होकर कहा, 'यह किताब तो रंगों के बारे में है! यह इस बारे में है कि हमें कहाँ लाल रंग की चीजें दिखाई दे सकती हैं, कहाँ पीली, कहाँ नीली - कार में, सड़क में, घर में, फूलों में। मैं इसे पढ़ सकती हूँ!'। धीरे-धीरे मैंने नमिता को हर शब्द पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

रमेश की अपने पठन को अचूक बनाने में बहुत रुचि थी। वह हर शब्द के अक्षरों को धीरे-धीरे और सही ढंग से बोलता था। जब वह किसी अनजान शब्द पर पहुँचता, तो रमेश पढ़ना रोक देता था। इस शब्द के लिए संघर्ष करते-करते वह पाठ का अर्थ भूल जाता था और निराश हो जाता था। मैंने उसे मेरी कहानियों को सुनने और अपने शब्दों में उन्हें दोबारा सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मैंने उसे मेरे साथ और अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलकर ऊँची आवाज़ में पढ़ने के लिए भी आमंत्रित किया और उसे समझाया कि छोटी-मोटी गलतियाँ होने पर भी वह परेशान न हो।

मैं कक्षा में जो कहानियाँ सुनाती थी, उन्हें सुनना प्रमिला को बहुत पसंद था। मैं अक्सर देखती थी कि वह बाद में कहानियों की उन्ही किताबों को बाद में पढ़ती थी। एक दिन, जब वह चित्रों और सरल वाक्यों वाली एक किताब में खोई हुई थी, तब मैंने उससे पूछा कि क्या वह मेरे लिए एक पन्ना पढ़ सकती है। उसने कहानी बिल्कुल सही सुना दी, लेकिन उसने पाठ को नहीं देखा और न ही पृष्ठ के किसी भी शब्द की ओर संकेत किया। मैंने उसकी तारीफ़ की, चित्रों को छिपा लिया और उसे फिर से वह कहानी मुझे सुनाने को कहा। चित्रों के मार्गदर्शन के बिना, इस बार उसे कठिनाई हुई। हालांकि, जब मैंने चित्र उजागर कर दिए, तो वह जारी रखने में सक्षम थी। उसने कहानी याद कर ली थी, लेकिन फिर भी वह अभी पढ़ना सीख रही थी। मैंने पढ़ने में उसका साथ दिया, और हर शब्द पर उँगली रखकर संकेत किया, ताकि वह पाठ को उस परिचित कहानी के साथ जोड़ सके।

इस केस स्टडी में, सुश्री गुप्ता ने देखा कि उनके विद्यार्थी पढ़ना सीखने के लिए विशिष्ट रणनीतियों का उपयोग करते थे और उनमें से हर एक की आगे बढ़ने में सहायता करने के लिए कदम उठाए।

विचार कीजिए

- क्या आपकी कक्षा में भी नमिता, रमेश और प्रमिला जैसे विद्यार्थी हैं?
- क्या आपकी कक्षा में कोई विद्यार्थी हैं, जो ऊपर वर्णित रणनीतियों से अलग रणनीतियों का उपयोग करते हैं?

पढ़ने का कोई एक ही तरीका नहीं है। इसलिए शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे इस जटिल कौशल में महारत हासिल करने और इसका अभ्यास करने के अलग अलग तरीकों को आज़माएँ।

संसाधन 3 में इस बारे में ज्यादा विचार दिए गए हैं कि किस तरह प्रभावी रूप से अपने विद्यार्थियों की निगरानी की जाए और उन्हें फीडबैक दिया जाए। अपने विद्यार्थियें को प्रोत्साहित करने वाला फीडबैक देने से उन्हें उनके प्रारंभिक पठन के विकास में सहायता मिल सकती है।

वीडियो: मॉनिटरिंग एवं फीड बैक

गतिविधि 4: अपनी कक्षा में पठन का अवलोकन करना

अपने विद्यार्थियों को समुचित सहायता देने में सक्षम होने के लिए, यह स्थापित करना महत्वपूर्ण है कि वे किस तरह की पठन रणनीतियों का उपयोग करते हैं। एक सारणी इस जानकारी को दर्ज करने का एक अच्छा तरीका हो सकती है। इसके बाद इस जानकारी के द्वारा आप इस

बात की योजना बना सकेंगे कि उनके पठन विकास में किस तरह सर्वश्रेष्ठ तरीके से सहायता की जाए। एक नमूना नीचे सारणी 1 में दिया गया है।

बारी-बारी से अपने विद्यार्थियों का अवलोकन करते समय, उनके नाम उन लेखन रणनीतियों के नीचे लिखें, जो उन पर लागू होती हैं। ऊपर केस स्टडी 4 में वर्णित नमिता रमेश और प्रमिला की पठन रणनीतियों के आकलन का अभ्यास करने से आपको मदद मिल सकती है। सुनिश्चित करें कि कुछ समय में आप अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए यह सारणी भर लें।

सारणी 1 अपने विद्यार्थियो की पठन रणनीतियों का अवलोकन करना

अनुमान	याददाश्त	पूर्वानुमान लगाने के लिए चित्रों का उपयोग करते हैं	शब्द के पहले अक्षर से पूर्वानुमान लगाते हैं	हर शब्द को अलग अलग पढ़ते हैं	पाठ के हिस्सों को पढ़ते हैं	प्रत्येक शब्द की ओर संकेत करते हैं	वाक्यों के नीचे ऊँगली घुमाते हैं

क्या आपके कुछ विद्यार्थी इन रणनीतियों का मिला जुला उपयोग करते हैं?

क्या आपने कोई अन्य रणनीतियाँ देखी हैं, जिनका उपयोग आपके विद्यार्थी करते हैं? यदि हाँ, तो उन्हें अपनी सारणी में जोड़ें।

एक जैसी रणनीतियों का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को पहचानें और उन्हें उसके अनुसार समूह में रखें। अपने पाठों की योजना इस प्रकार बनाएँ कि आप समय के साथ-साथ उनकी अलग अलग ज़रूरतों के अनुसार प्रतिक्रिया दे सकें। कुछ विद्यार्थियें को आपसे अलग से सहायता की ज़रुरत हो सकती है।

अन्य के साथ आप छोटे समूहों में काम करने में सक्षम हो सकते हैं। अलग अलग रणनीतियों का उपयोग करने वाले पाठकों की जोड़ियाँ बनाने पर विचार करें, ताकि आप देख सकें कि क्या वे एक दूसरे से सीख सकते हैं।

पूरे स्कूली वर्ष के दौरान आपके छोटे विद्यार्थियों की पठन प्रगति के अभिलेख विकसित करने के लिए सारणी की कॉपियों का उपयोग करें।

मुख्य संसाधन 'प्रगति और प्रदर्शन का मूल्यांकन' को पढ़ने से भी आपको मदद मिल सकती है।

वीडियो: प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना

4 सारांश

प्रारंभिक पठन सिखाना एक परस्पर सहयोग, आकर्षक और मज़ेदार प्रक्रिया होनी चाहिए। चाहे इसमें कथावाचन शामिल हो या बोलकर पढ़ना, इसके द्वारा बच्चों को वाक्यांश दोहराने, हाव–भाव का उपयोग करने, आगे क्या होने वाला है इसका अनुमान लगाने, बाद में कहानी को फिर से याद कर पाने, और इससे संबंधित नाटक या कला की गतिविधियाँ करने के मौके मिलने चाहिए।

छोटे विद्यार्थियों के साथ, प्रतिदिन एक संक्षिप्त पठन कालखंण्ड लंबे, ज्यादा अनियमित कालखण्डों की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। जब विद्यार्थी पढ़ने के उदाहरण देखते हैं और नियमित रूप से पुस्तकों का उपयोग करते हैं, तो वे खुद भी उन्हें पढ़ने की कोशिश करते हैं।

एक अच्छा पाठक बनने के कई रास्ते हैं। मज़ेदार गतिविधियों, अभ्यास और समय-समय पर मिलने वाली सहायता के द्वारा, आपके विद्यार्थी वाक्पटु, आत्मविश्वासी पाठक बन सकते हैं, जिससे उन्हें आगे के शिक्षण के लिए एक मज़बूत आधार मिलेगा।

संसाधन

संसाधन **1: 'बस पर बक्से'** (Boxes on the Bus)

> बस स्टेशन पर रुकी। एक बूढ़ा व्यक्ति बस में सवार हुआ। उसके हाथ में एक भूरा बक्सा था और उस बक्से में था ... [एक टोपी]। इसके बाद एक माँ और उसका बच्चा बस में चढ़े। उसके हाथ में एक सफ़ेद बक्सा था और उस बक्से में था ... [एक कंगन]। इसके बाद, एक लकड़हारा बस में चढ़ा। उसके पास एक बहुत लंबा लकड़ी का बक्सा था और उस बक्से में थी ... [एक कुल्हाड़ी]। इसके बाद एक रसोइया बस में चढ़ा। उसके हाथ में था एक चपटा, गोल बक्सा और उस बक्से में थी ... [एक रोटी]।

जब तक आप चाहें, तब तक इस कहानी को जारी रखें। जब बस में बहुत भीड़ हो गई, तो ड्राइवर ने कहा, 'अब मैं और ज्यादा लोग या बक्से नहीं ले सकता! दरवाज़े बंद हो रहे हैं! चूँ–चूँ'

उपर्युक्त उदाहरण के समान आप आकृतियाँ, रंग और बक्से किस सामग्री से बने हैं, यह बताकर कहानी की जटिलता को बढ़ा सकते हैं, और उनकी सामग्री में वर्णनात्मक शब्द जोड़कर या बहुवचन वाली या न गिनी जा सकने वाली चीजें जोड़कर (उदाहरण के लिए, 'उसके पास धातु का एक भारी बक्सा था और उस बक्से में चमड़े के पुराने जूते/थोड़ा आटा/तीन मोटे मुर्गे थे'), या बक्सों से आ रहे शोर का ज़िक्र करके (जैसे 'वह एक बहुत छोटा बक्सा ले जा रही थी और उस बक्से में से चरमराने की आवाज़ आ रही थी') इसकी विषयवस्तु को और चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं। इस कहानी के द्वारा विद्यार्थियों को अलग अलग व्यवसायों और लोगों द्वारा उनके कामों में उपयोग किए जाने वाले औज़ारों का भी परिचय मिल सकता है।

इस प्रकार बक्सों और उनकी वस्तुओं की सूची लंबी होती जाने पर, यह कहानी एक स्मृति खेल बन जाती है।

संसाधन **2:** ऊँची आवाज़ में पढ़ने के सत्र की योजना

तैयारी

- ऊँची आवाज़ में बोलकर सुनाने के लिए एक सरल कहानी चुनें। पुस्तक पर्याप्त रूप से इतनी बड़ी होनी चाहिए, ताकि आपके सभी विद्यार्थी उसके शब्दों और चित्रों को देख सकें।
- सुनिश्चित कर लें कि आप उस कहानी से पहले से ही परिचित हैं।
- स्कूल में किसी साथी को या घर में अपने परिवार को वह कहानी हावभाव के साथ पढ़कर सुनाने का अभ्यास करें और पुस्तक को इस तरह पकड़ें कि जब आप कहानी पढ़ रहे हों, उसी समय आपके विद्यार्थी भी इसे देख सकें।
- यदि कोई अपरिचित शब्द या अवधारणाएं मिलती हैं, तो उन्हें दर्ज करें, और यह याद रखें कि कुछ विद्यार्थी स्कूल की भाषा (मानक भाशा) में कम जानते होंगे।

कहानी पढ़ने से पहले

- अपने विद्यार्थियों को अपने आस-पास इकट्ठा करें, ताकि वे किताब को अच्छी तरह देख सकें।
- अपने विद्यार्थियों से कहानी की थीम से जुड़े किसी अनुभव के बारे में बात करें, जो शायद उनके साथ भी हुआ हो।
- यदि कहानी में कोई ऐसे मुख्य शब्द हैं, जो शायद आपके विद्यार्थियों को मालूम न हों, तो विद्यार्थियों को उनसे परिचित करवाएँ और उनके अर्थ के बारे में बात करें। यह विशिष्ट रूप से उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है, जिनके घर की भाषा स्कूल की भाषा से अलग है।
- सबसे पहले अपने विद्यार्थियों को पुस्तक का मुख्य पृष्ठ दिखाएँ। एक छोटे अंश की ओर संकेत करें और वह पढ़कर सुनाएँ मुखपृष्ठ पर बने चित्र के बारे में बात करें और अपने विद्यार्थियों से पूछें कि क्या वे अनुमान लगा सकते हैं कि कहानी किस बारे में है।

कहानी पढ़ना

- पाठ को अभिव्यक्ति सहित पढ़ें, और हर पात्र के लिए अलग अलग आवाज़ों का उपयोग करें।
- वाक्यों को पढ़ते समय शब्दों के नीचे अपनी ऊँगली घुमाएँ।
- अपने विद्यार्थियों से कहें कि वे साथ बने चित्रों में क्या हो रहा है, इसका वर्णन करें:
  - 'आपको चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?'
  - 'आपके विचार से क्या हो रहा है?'

- जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ अगला पन्ना पलटने से पहले, अपने विद्यार्थियों को यह अनुमान लगाने के लिए आमंत्रित करें कि आगे क्या होने वाला है, इसके लिए उनसे प्रश्न करें, जैसे:
  - 'पता नहीं, आगे क्या होगा?'
  - 'आपको क्या लगता है, वह अब क्या कहेगा?'

कहानी पढ़ने के बाद

कहानी के बारे में बात करें। अपने विद्यार्थियों से इस तरह के प्रश्न करें , जैसे:

- 'आपको कौन-सा भाग सबसे ज्यादा अच्छा लगा?'
- 'आपका पसंदीदा पात्र कौन-सा था? क्यों?'

छोटे विद्यार्थियों से बहुत विस्तृत उत्तर पाने की उम्मीद न करें। जब आप प्रक्रिया का और पठन के आनंद का उदाहरण देते हैं, तो इस चर्चा को आनंददायक बनाते हैं। अपने स्वयं के विचार व्यक्त करना भी न भूलें!

आकलन के अवसर

- आपने अपने विद्यार्थियों को जो कहानी पढ़कर सुनाई, उसके प्रति उनकी प्रतिक्रिया कैसी थी?
- क्या ऐसा लगा कि उनमें से कुछ विद्यार्थी इसे नहीं समझ पा रहे थे? यदि हाँ, तो इसका कारण क्या रहा होगा?
- क्या उनमें से किसी ने इसके बाद उन मुख्य शब्दों या अभिव्यक्तियों में से किसी का उपयोग किया?
- क्या आपने किसी विद्यार्थी को बाद में स्वयं ही वह पुस्तक उठाते हुए और आपके पठन व्यवहार की नकल करते हुए उस पर नज़र डालते हुए देखा?

संसाधन 3: अवलोकन करना और अभिमत देना

विद्यार्थियों के कार्यप्रदर्शन में सुधार करने में लगातार निगरानी करना और उनकी प्रतिक्रिया प्राप्त करना शामिल होता है, ताकि उन्हें पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है और उन्हें काम को पूरा करने पर प्रतिक्रिया प्राप्त होनी हैं। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से वे अपने कार्यप्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।

अवलोकन करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने विद्यार्थियों का अवलोकन करते हैं। सामान्य तौर पर, अधिकांश शिक्षक अपने विद्यार्थियों के काम की निगरानी वे कक्षा में जो कुछ हो रहा हैं उसे सुनकर और देखकर करते हैं। विद्यार्थियों की प्रगति का अवलोकन करना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे उन्हें निम्नलिखित बातो में मदद मिलती है:

- अधिक ऊँचे ग्रेड प्राप्त करना
- अपने कार्यप्रदर्शन के बारे में अधिक सजग रहना और अपनी सीखने की प्रक्रिया के प्रति अधिक जिम्मेदार होना
- अपनी सीखने की प्रक्रिया में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीय मानकीकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान करना।

इससे आपको एक शिक्षक के रूप में निम्नांकित बातें निर्धारित करने में मदद मिलती है:

- कब प्रश्न करें या प्रोत्साहित करें
- कब प्रशंसा करें?
- चुनौती दें या नहीं?

  किसी काम में विद्यार्थियों के अलग-अलग समूहों को कैसे शामिल करें?
- गलतियो के विषय में क्या करें?

विद्यार्थी सबसे अधिक सुधार तब करते हैं जब उन्हें उनकी प्रगति के बारे में स्पष्ट और शीघ्र प्रतिक्रिया दी जाती है। अवलोकन करने का उपयोग करना, आपका विद्यार्थियों को बताने कि वे कैसे काम कर रहे हैं और उनके सीखने की प्रकिया को उन्नत करने में उन्हें किस दूसरी चीज की जरूरत है, इस बारे में नियमित प्रतिक्रिया देने में सक्षम करेगा।

आपके सामने आने वाली यह एक चुनौती होगी, अपने विद्यार्थियों की उनके स्वयं के सीखने के लक्ष्यों को तय करने में मदद करना, जिसे स्व-अवलोकन भी कहा जाता है। विद्यार्थी विशेष तौर पर, कठिनाई अनुभव करने वाले विद्यार्थी अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया का आपको निर्धारित करने के अभ्यस्त नहीं होते हैं। लेकिन आप किसी परियोजना के लिए अपने स्वयं के लक्ष्य या उद्देश्य निर्धारित करने, अपने काम की योजना बनाने और समय सीमाएँ निर्धारित करने, और अपनी प्रगति की स्व-निगरानी करने में किसी भी विद्यार्थी की मदद कर सकते हैं। स्व- मूल्यांकन के कौशल की प्रक्रिया का अभ्यास और कुशलता हासिल करना उनके लिए विद्यालय और उनके सारे जीवन में उपयोगी साबित होगा।

विद्यार्थियों की बात सुनना और अवलोकन करना

अधिकांश समय, शिक्षक स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों की बात सुनते और उनका प्रेक्षण करते हैं; यह अवलोकन करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए, आप:

- अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- जोड़ियों या समूहकार्य में चर्चाएं सुन सकते हैं
- विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर या कक्षा में संसाधनों का उपयोग करते देख सकते हैं
- समूहों के काम काम करते समय उनकी शारीरिक भाषा का अवलोकन कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें जो कि आप अभिलेख रखते हैं वे विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया या प्रगति का सच्चा प्रमाण हो। सिर्फ वही बात रिकार्ड करें जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, उचित सिद्ध कर सकते हैं या जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं।

जब विद्यार्थी काम करें, तब कमरे में घूमें और संक्षिप्त अवलोकन टीप बनाएँ आप कक्षा सूची का उपयोग करके दर्ज कर सकते हैं कि किन विद्यार्थियों को अधिक मदद की जरूरत है, और किसी भी गलत समझ को भी नोट कर सकते हैं। इन प्रेक्षणों और टीप का उपयोग आप सारी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों अथवा विद्यार्थी विशेष को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है जो आप किसी छात्र को यह बताने के लिए देते हैं कि उन्होंने किसी घोषित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में कैसा कार्य किया है। प्रभावी प्रतिक्रिया छात्र को:

- जानकारी देती है कि क्या हुआ है
- इस बात का मूल्यांकन देती है कि कोई कार्यवाही या काम कितनी अच्छी तरह से किया गया
- मार्गदर्शन देती है कि कार्यप्रदर्शन को कैसे सुधारा जा सकता है।

जब आप प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिक्रिया देते हैं, तब उसे यह जानने में उनकी मदद करनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं
- वे अभी क्या नहीं कर सकते हैं
- उनका काम अन्य लोगों की तुलना में कैसा है
- वे कैसे सुधार कर सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभावी प्रतिक्रिया विद्यार्थियों की मदद करती है। आप यह नहीं चाहेंगे कि आपकी प्रतिक्रिया के अस्पष्ट या अन्यायपूर्ण होने के कारण सीखने की प्रक्रिया में कोई रूकावट आए। प्रभावी प्रतिक्रिया:

- हाथ में लिए गए काम और विद्यार्थी द्वारा सीखी जा रही बात पर संकेंद्रित होती है
- स्पष्ट और ईमानदार होती है, और विद्यार्थी को बताती है कि उसके सीखने की प्रक्रिया के बारे में क्या अच्छी बात है और उसे कहाँ सुधार करना चाहिए
- कार्यवाही के योग्य होती है, और विद्यार्थी को ऐसा कुछ करने को कहती है जिसे करने में वे सक्षम होते हैं
- विद्यार्थी के समझ सकने योग्य भाषा में दी जाती है
- सही समय पर दी जाती है – यदि वह बहुत जल्दी दी गई तो विद्यार्थी सोचेगा 'मैं यही तो करने जा रहा था!'; बहुत देर से दी गई तो विद्यार्थी का ध्यान और कहीं चला जाएगा और वह वापस लौटकर वह नहीं करना चाहेगा जिसके लिए उसे कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे बोली जाए या विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिका में लिखी जाए, वह तभी अधिक प्रभावी होती है यदि वह नीचे दिए गए दिशा निर्देशों का पालन करती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय के मुकाबले काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, जबकि हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गलती सुधारी जाती है। सुदृढ़ीकरण और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा को विशिष्ट और स्वयं विद्यार्थी की बजाय किए गए काम पर केन्द्रित होना चाहिए, अन्यथा वह विद्यार्थी की प्रगति में मदद नहीं करेगी। 'शाबाश' सामान्य शब्द है, इसलिए निम्नलिखित में से कोई बात कहना बेहतर होगा:

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

अपने विद्यार्थियों के साथ आप जो बातचीत करते हैं वह उनके सीखने की प्रक्रिया में मदद करती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि उनका उत्तर गलत है और संवाद को वहीं समाप्त कर देते हैं, तो आप सोचने और स्वयं प्रयास करने में उनकी मदद करने का अवसर खो देते हैं। यदि आप विद्यार्थियों को संकेत देते हैं या आगे कोई प्रश्न करते हैं, तो आप उन्हें अधिक गहराई से सोचने को प्रेरित करते हैं और उत्तर खोजने तथा अपने स्वयं के सीखने का दायित्व लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, आप बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहित या किसी समस्या पर किसी अलग दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित बातें कह सकते हैं:

दूसरे विद्यार्थियों को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप यह काम निम्नानुसार टिप्पणियों के साथ शेष कक्षा के लिए अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करके कर सकते हैं:

हाँ या नहीं के साथ सुधारना वर्तनी या संख्या के अभ्यास की तरह के कामों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन यहां पर भी आप विद्यार्थियों को उभरते प्रतिमानों पर नजर डालने या समान उत्तरों से संबंध बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं या चर्चा शुरू कर सकते हैं कि कोई उत्तर गलत क्यों है।

स्वयं सुधार करना और समकक्षों से सुधार करवाना प्रभावी होता है और आप इसे विद्यार्थियों से दिए गए कामों को जोड़ियों में करते समय स्वयं अपने और एक दूसरे के काम की जाँच करने को कहकर प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक समय में एक पहलू को सही करने पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा होता है ताकि भ्रम में डालने वाली ढेर सारी जानकारी न हो।

अतिरिक्त संसाधन

- *Annual Status of Education Report 2012*, published by ASER Centre: http://www.asercentre.org/education/India/status/p/143.html
- Room to Read, India: http://www.roomtoread.org/Page.aspx?pid=304
- A useful site for explaining what reading involves: http://www.readingrockets.org/article/352
- Traditional Indian stories: http://www.indiaparenting.com/stories/index.shtml#77
- Knowledge, behaviours and activities for early readers: http://www.siue.edu/education/readready/1_Literacy/1_SubPages/1_ld_emergent.htm
- Resources to improve students' reading and writing in school: http://fdf.readingrecovery.org/resources
- Phonemic awareness activities: http://teams.lacoe.edu/documentation/classrooms/patti/k-1/activities/phonemic.html

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Clay, M.M. (2005) *Literacy Lessons Designed for Individuals.* Portsmouth, NH: Heinemann.

Graham, J. and Kelly, A. (2000) *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*, 2nd edn. London: David Fulton Publishers, in association with the University of Surrey.

IT Tragedy (undated) 'Independence Day poem kids Hindi English short long [sic]' (online). Available from: http://www.ittragedy.com/independence-day-poem-kids-hindi-english-short-long/ (accessed 23 October 2014).

Jhingran, D. (2005) *Language Disadvantage: The Learning Challenge in Primary Education*. New Delhi: APH Publishers.

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियोंके प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।